Ch-2

23/2/2022

एक दल के प्रभुत्व का दौर

(1.) लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती :—

⇒ स्वतंत्र भारत का जन्म अत्यंत कठिन परिस्थितियों में हुआ था। हमारे देश के समक्ष प्रारम्भ से ही राष्ट्र-निर्माण की चुनौती थी।

⇒ हमारे स्वतंत्रता संघर्ष की गहरी प्रतिबद्धता लोकतंत्र के साथ होने के कारण हमने लोकतन्त्र की स्थापना का मार्ग चुना।

⇒ भारतीय राजनेताओं ने लोकतंत्र की स्थापना हेतु समाज के विभिन्न समूहों में पारस्परिक एकता की भावना को विकसित करने का प्रयास किया।

⇒ हमारा संविधान 26 नवम्बर 1949 को अंगीकृत किया गया और 24 जनवरी 1950 को इस पर हस्ताक्षर हुए। यह संविधान 26 जनवरी 1950 से अमल में आया।

⇒ चुनाव आयोग का गठन 1950 के जनवरी मे हुआ। सुकुमार सेन पहले चुनाव आयुक्त बने।

⇒ भारत के विशाल आकार को देखते हुए निष्पक्ष चुनावों की कामना करना एक कठिन कार्य था।

⇒ चुनाव कराने के लिए, चुनाव क्षेत्रों का सीमाकंन व मतदाता सूची का निर्माण किया जाना आवश्यक था। इन दोनों कार्यों में बहुत अधिक समय लगने वाला था।

⇒ प्रथम आम चुनाव में 17 करोड़ मतदाताओं द्वारा 3200 विधायको एवं लोकसभा के लिए 489 सांसदो को चुना जाना था। इन मतदाताओं में केवल 15 प्रतिशत ही

साक्षर थे। अतः इनको मतदान के विषय में जानकारी देना एक महत्वपूर्ण समस्या थी।

⇒ प्रथम चुनाव अक्तूबर 1951 से फरवरी 1952 के मध्य सम्पन्न हुए। प्रथम आम-चुनाव को 1952 का चुनाव भी कहा जाता है क्योंकि देश के अधिकांश भागों में मतदान सन् 1952 में ही हुआ था।

⇒ प्रथम आम-चुनावों के शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न होने को विदेशी पर्यवेक्षकों ने भारतीय जनता की एक महत्वपूर्ण सफलता माना।

⇒ भारत ने सम्पूर्ण विश्व को यह दिखा दिया कि लोकतांत्रिक ढंग से चुनाव निर्धनता एवं अशिक्षा के वातावरण में भी कराए जा सकते हैं।

(2.) पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व :—

⇒ प्रथम आम-चुनाव में कांग्रेस को आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई। कांग्रेस ने 489 सीटों में से 364 पर विजय प्राप्त की थी।

⇒ कांग्रेस पार्टी के नेता जवाहर लाल नेहरू थे जो भारतीय राजनीति के सबसे करिश्माई व लोकप्रिय नेता थे।

⇒ प्रथम आम-चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को द्वितीय स्था प्राप्त हुआ। उसे कुल 16 सीटें प्राप्त हुई थी।

⇒ कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा के साथ-साथ विधानसभाओं के चुनावों में भी भारी जीत प्राप्त की थी।

Page No.: PANKAJ
Date: / /

⇒ प्रथम आम-चुनाव के पश्चात राष्ट्रीय व प्रान्तीय स्तर पर सम्पूर्ण देश में कांग्रेस पार्टी का शासन स्थापित हुआ।

⇒ प. जवाहर लाल नेहरू को देश का प्रथम प्रधानमंत्री बनाया गया।

⇒ द्वितीय (1957) एवं तृतीय आम चुनाव (1962) में भी कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ उसने तीन चौथाई सीटें जीतीं।

⇒ हमारे देश की चुनाव प्रणाली में 'सर्वाधिक वोट पाने वाले की जीत' के तरीके को अपनाया गया है।

⇒ इस तरह कांग्रेस बाकी पार्टियों की तुलना में आगे रही और उसने ज्यादा सीटें जीतीं।

(3.) कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति :—

⇒ भारत की तरह विश्व के कई देश एक पार्टी के प्रभुत्व के दौर से गुजरे हैं लेकिन भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतांत्रिक स्थितियों में कायम हुआ जो इसे अन्य देशों से अलग करता है।

⇒ भारत में कांग्रेस पार्टी की असाधारण सफलता की जड़े स्वतंत्रता संग्राम की विरासत में है। हमारे देश में केवल कांग्रेस पार्टी को राष्ट्रीय आन्दोलन के उत्तराधिकारी के रूप में देखा गया।

⇒ कांग्रेस प्रारम्भ से ही एक सुसंगठित पार्टी थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में अग्रणी रहे इस पार्टी के नेताओं ने कांग्रेस के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा तो अन्य पार्टियाँ कांग्रेस के समक्ष बौनी साबित हुईं।